मन माने की बात

प्रफुल्ल कोलख्यान

कुंज भवन से क्रोध में निकल चीखने लगे कन्हैया
ये मन माने की बात है राधा, मन माने की बात

सुर न कोई ताल बचा है गावत क्या खूब गवैया
बैठे अचरज में सोच रहे हैं के धुनिहे इता रौइया
करुणा की बाँह पकड़ नाचे थमथम ता था थैया
बेचेगा तभी बचेगा, हाथ में जिनके खरा रपैया
दिल्ली पंचायत बन गई लखनऊ की भूलभूलैया
तूफानों के पाहुन बन गये अपने प्रियवर खवैया
अपनी फूटी आँखों से ही रही देखती जर्जर नैया
राग तिलस्मी गाते-गाते झूम रहे थे अपने भैया
सुनते रहे हम भी घर बैठे बनकर झूमरी तलैया

कुंज भवन से क्रोध में निकल चीखने लगे कन्हैया
ये मन माने की बात है राधा, मन माने की बात